INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

लोक साहित्य और पारंपरिक ज्ञान का व्यवसायिक उपयोग

प्रा. डॉ. सुनिता बबन पठारे
सहाय्यक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
बेलापूर एज्युकेशन सोसायटी का
कला व वाणिज्य महाविद्यालय बेलापूर
ता – श्रीरामपूर जि – अहिल्यानगर
पिन – 413715

प्रस्तावना

लोक संस्कृति के अंतर्गत लोक साहित्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि इसमें लोग संस्कृति के सभी अंगों की झलक मिलती हैI किसी भी समाज की मान्यताएं, अंधविश्वास, त्यौहार, रीति-रिवाज, गीत, गाथा, किस्से, कहानी, कहावतें, मुहावरे आदि का परिचय हमें लोक साहित्य के द्वारा ही मिलता हैI लोक साहित्य के अध्ययन से इतिहास, भूगोल, पुरातत्व, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, धर्मशास्त्र आदि अनेक समाज विज्ञानों के महत्वपूर्ण तथ्य मिलते हैंI

लोक की भावनाओं को व्यक्त करने वाली व्यक्तित्वहीन अभिव्यक्ति को लोक साहित्य कहा जाता हैI लोकसाहित्य मौखिक एवं परंपरागत होता है, इसकी परंपरा अत्यंत प्राचीन है, तथा लोक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और विस्तृत रहा हैI साधारण जनता का हंसना-रोना, गाना, खेलना-कूदना सभी लोकसाहित्य के अंतर्गत आ जाता हैI लोकसाहित्य परंपरा पोषक और संस्कृति संवाहक होता हैI इसमें कालानुरूप परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता हैI

लोक साहित्य का महत्व

लोकसाहित्य जनता की संस्कृति, परंपराओं, रीति-रिवाज और जीवन मूल्यों का सच्चा दर्पण है, जो समाज को अगली पीढ़ी से जोड़ता है, ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी देता हैI सरल भाषा में नैतिक शिक्षा देता है और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त कर मानव को आपस में जोड़ने का काम करता हैI लोकसाहित्य से सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होता है, नैतिक और सामाजिक शिक्षा मिलती हैI लोक साहित्य में जनजीवन का प्रतिबिंब होता हैI लोककथाओं और गाथाओं में स्थानीय इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी छिपी होती है जो इतिहास की किताबों में नहीं मिलतीI लोकसाहित्य स्थानीय बालियां और भाषाओं में रचा जाता है यह भाषा के विकास और बोलीविज्ञान के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करता हैI लोकगीत लोककथाएं और लोकनाट्य मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा भी प्रदान करते हैंI खासकर ग्रामीण जीवन में लोक साहित्य किसी भी समाज का वह अनमोल खजाना है, जो उसके अतीत को वर्तमान से जोड़ता है और भविष्य की दिशा तय करने में मदद करता हैI

लोकसाहित्य की परिभाषा

1) डॉ. 'धीरेंद्र वर्मा' के अनुसार, "वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है, जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढी हो पर आज से सामान्य लोक समूह अपनी ही मानता है इसमें लोक मानस प्रतिबिंबित रहता है I"[1]

2) डॉ. 'त्रिलोचन पांडे' के अनुसार, "जैन साहित्य या लोक साहित्य उन समस्त परंपरा, मौखिक तथा लिखित रचनाओं का समूह है, जो किसी भी एक व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों द्वारा निर्मित तो हुआ है, परंतु उसे समस्त जन समुदाय अपना

मानता है, इस साहित्य में किसी जाति समाज या एक क्षेत्र में रहने वाले सामान्य लोगों की परंपराएं आचार-विचार रीति-रिवाज हर्ष-विषाद आदि समाहित रहते हैं I”[2]

उद्देश्य

1) लोक साहित्य और लोक संस्कृति से परिचित होना I
2) लोक साहित्य की व्यवसायिकता पर प्रकाश डालना I
3) लोक साहित्य और पारंपरिक ज्ञान पर प्रकाश डालना I

लोक साहित्य और पारंपरिक ज्ञान

आज के विकसित समाज में लोकसाहित्य का पारंपरिक ज्ञान होना आवश्यक हैI लोकसाहित्य और पारंपरिक ज्ञान का संबंध एक दूसरे के गहराई से जुड़ा हैI “लोक साहित्य का पारंपरिक ज्ञान कहानी, गीत, पहेलियां, और कहावतों के माध्यम से मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य करते हैं, जो ज्ञान किसी लोक समुदाय की संस्कृति, मान्यताएं, रीति-रिवाज और पर्यावरण से जुड़े हुए ज्ञान को अपनाता है और इसे अक्सर लोग मानस का दर्पण भी कहा जाता है I”[3] लोक साहित्य के पारंपरिक ज्ञान से मूल्य और नैतिकता का संचार होता है, जैसे की लोकसाहित्य में कहानी, लोकगीत, लोकगाथा, पहेलियां, मुहावरे, कहावतें, इससे बच्चों और बड़ों को सामाजिक आदर्श नैतिकता और जीवन जीने का तरीका सिखाता है I

लोकसाहित्य के पारंपरिक ज्ञान से इतिहास और संस्कृति का दस्तावेजीकरण होता है, वह किसी समाज के रीति-रिवाज, त्यौहार, उत्सव, देवी-देवताओं, विश्वास और जीवन शैली का वास्तव और अलिखित संकलन होता हैI लोकसाहित्य में मनोवैज्ञानिकता के जरिए अवचेतन मन की गहराइयों को समझने में सहायता मिलती है, यह लोक मानस की आशा-निराशा, सुख-दुख को व्यक्त कर मनोवैज्ञानिक संतुष्टि देता हैI लोकसाहित्य के माध्यम से प्राकृतिक और कृषि ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता है, इसमें स्थानीय वनस्पतियों, पशुओं, मौसम, रोगों के निदान और कृषि संबंधी पारंपरिक ज्ञान का महत्व हैI लोकसाहित्य के पारंपरिक ज्ञान से समाज की प्रथाओं, विश्वासों, नैतिकता और सामाजिक व्यवहार को दिशा मिलती हैI लोक साहित्य के पारंपरिक ज्ञान से संस्कृतिकता और सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता हैI लोकसाहित्य और पारंपरिक ज्ञान किसी समाज की आत्मा संस्कृति और मूल्यों का दर्पण होता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होकर जीवन के हर पहलुओं को दर्शाते हैं, जिससे सामाजिक एकता, ऐतिहासिक समझ और सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा मिलता है और आज तकनीक के जरिए इनके संरक्षण संवर्धन और अध्ययन का महत्व और बढ़ गया है, क्योंकि यह अमूल्य विरासत है और इस अमूल्य विरासत को नष्ट होने से बचाए और उसका संवर्धन करेंI

लोकसाहित्य के सामाजिक दर्पण से लोगो के व्यवहारो का सरल और सजीव चित्रण होता है, जो समाज की वास्तविक तस्वीर दिखता हैI लोकसाहित्य में इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान जैसे विषयों के लिए महत्वपूर्ण स्रोत सामग्री प्रदान करता है, इससे ज्ञान का प्रचार एवं प्रचार होता है, इसलिए लोकसाहित्य और परंपरिकता ज्ञान का स्रोत माना जाता हैI लोकसाहित्य से समाज को लोककथा, लोकगीत, लोककथा, कहावतों के मध्यम से नैतिक शिक्षाएं मिलती हैं और इससे समाज की आध्यात्मिक चेतना व जीवन शक्ति को बढ़ावा मिलता हैI लोकसाहित्य में आधुनिक प्रासंगिकता जैसे सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यम से लोक साहित्य और ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित किया जा रहा है, जिससे यह नई पीढ़ी तक पहुंच सके और विश्वभर की संस्कृतियो को समझा जा सके I

लोकसाहित्य की व्यवसायिकता

व्यवसायिकता का अर्थ है, किसी व्यवसाय या पेशे से संबंधित ज्ञान कौशल और नैतिक आचरण का एक संयोजनI लोकसाहित्य की व्यवसायिकता का अर्थ है लोक साहित्य का आम जनता के दैनिक जीवन व्यवहार रीति-रिवाज और भावनाओं को सरल स्वाभाविक और सामूहिक रूप से अभिव्यक्त करना जो कि किसी विशेष लेखक की रचना न होकर

पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होती है। इसका उद्देश्य व्यवहारिकता के साथ सुखी जीवन जीना और सांस्कृतिक मूल्यों को बचाना है जिसे कहानी, गीत, पहेलियां और कहावतें लोकसाहित्य की व्यवसायिकता लोक जीवन का वास्तविक प्रतिबिंब होता है जिसमें लोगों के हास-परिहास दैनिक क्रिया-कलाप सुख-दुख स्वाभाविक रूप से वर्णित होते हैं। लोक साहित्य में जनसमूह की रचना होती है ना कि किसी एक व्यक्ति की यह पूर्ण जन समूह की सामूहिक चेतना, अनुभव और संवेदनाओं का परिणाम होता है। लोक साहित्य की व्यवसायिकता का व्यावहारिक उद्देश्य व्यवहारिक ज्ञान देना, रिश्तों को मजबूत करना, जैसे- (भाई-बहन, दादा-दादी, पति-पत्नी) और सरल व सुखी जीवन जीने का तरीका सिखाना होता है। लोकसाहित्य की व्यवसायिकता में सांस्कृतिक धरोहर का महत्व है, यह संस्कृति, इतिहास और लोकाचार का भंडार होता है, जो नई पीढियो को अपनी पहचान और ज्ञान देता है। बरगद-पीपल को पूजना, नदियों को बहन मानना और अमानवीय तत्वों से रिश्ते जोड़ना यह सब रूढ़ियों और विश्वास व्यवहारिक जीवन का हिस्सा है।

लोकसाहित्य की व्यवसायिकता में सांस्कृतिक पर्यटन का महत्व है। लोकनृत्य, लोकगीत, हस्तशिल्प और लोककथाएं जैसी सांस्कृतिक परंपराएं, त्यौहार पर्यटकों को आकर्षित करती हैं, जिससे स्थानिक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। लोकसाहित्य के व्यवसायिकता से इतिहास, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र की शोधकर्ताओं के लिए अमूल्य शैक्षणिक और शोध सामग्री प्रदान करता है। लोककथाएं, मिथक और लोकगीतों को फिल्मों, धारावाहिक एवं नाटकों और संगीत में रूपांतरित करके इन कलाओं से लोगों का मनोरंजन होता है। लोकसाहित्य की व्यवसायिकता में रोजगार सृजन का महत्व है, जिसमें लोक कलाकार, कथावाचक और पारंपरिक शिल्पकारों को प्रोत्साहन और संरक्षण देकर सरकारी योजनाएं, संग्रहालय और पुरस्कार जैसे रोजगार निर्माण किया जा सकते हैं।

लोकसाहित्य केवल पुरानी बातें नहीं बल्कि एक जीवंत धरोहर है और समाज के भूत, वर्तमान और भविष्य को समझने का एक सशक्त माध्यम है जो ज्ञान की कई शाखों के लिए उपयोगी है। लोकसाहित्य समाज को दिशा देता है और आधुनिक युग में भी व्यावसायिक और सांस्कृतिक विकास की अपार संभावना है।

निष्कर्ष

1) लोक साहित्य और पारंपरिक ज्ञान से लोक जीवन आशा-निराशा, सुख-दुख और व्यवहारों का सरल व सचिव चित्रण होता है, जो समाज की वास्तविक तस्वीर दिखता है।

2) लोक साहित्य का पारंपरिक ज्ञान समाज की संस्कृति, परंपराएं, मान्यताएं और जीवन मूल्यों का सच्चा और स्थाई प्रतिनिधित्व करता है।

3) लोक साहित्य में शैक्षिक और मनोवैज्ञानिकता के माध्यम से बच्चों में मौखिक परंपराओं, पहेलियां और गीतों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है।

4) वैश्वीकरण के दौर में लोक साहित्य के संरक्षण और व्यावसायिक उपयोग पर शोध किया जा सकता है।

5) लोक साहित्य किसी जनसमुह के मौखिक परंपराओं, विश्वासों, रीति-रिवाज और लोक ज्ञान का वह भंडार है , जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक या आचरण के जरिए हस्तांतरित होता है।

6) यह जंगली जातियों का साहित्य है, यहां एक शब्द का तात्पर्य उन लोगों के साहित्य से है जो आदिम परंपराओं को सुरक्षित रखे हुए हैं।

7) लोकसाहित्य ग्रामीण साहित्य है, इस साहित्य पर समस्त जनसमूह का अधिकार है।

8) लोकसाहित्य समस्त लोक के राग-विराग, हर्ष-विषाद, सुख-दुख, जीवन-मरण की सहज एवं सरस अभिव्यक्ति है, यह साहित्य सर्व व्यापक है, उससे अधिक राष्ट्रव्यापी है और जितना राष्ट्रव्यापी है उससे भी कहीं अधिक अंतरराष्ट्रीय है।

9) यह संपूर्ण मानव जाति की विरासत है, लोक साहित्य जनता द्वारा रचित, जनता का, जनता के लिए साहित्य है।

१०) लोकसाहित्य में किसी व्यक्ति विशेष की नहीं बल्कि, समस्त जगत के कल्याण की भावना समाहित होती है।

संदर्भ

1) डॉ. धीरेंद्र वर्मा– लोकसाहित्य की भूमिका- साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद।

2) डॉ. त्रिलोचन पांडे - कुमाउनी लोकसाहित्य की पृष्ठभूमी – साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबादI

3) डॉ. सत्येंद्र – लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथघर, जोधपुर I

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.